माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन

बलवान सिंह* और डॉ. रविकान्त यादव**

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना है। न्यादर्श के रूप में सीकर जिले के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इनमें 200 सरकारी विद्यालय तथा 200 गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है। आंकडों के संकलन हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची को लिया गया है। अंत में परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर नही पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के परिश्कार एवं विकास की प्रणाली है। शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य की मंजिल पर पहुँचता है। शिक्षा द्वारा मानव को ज्ञानवान, कला कौशल युक्त और सभ्य बनाया जाता है। यह माता के समान पालन पोशण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है अर्थात जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कश्ठ के अंधकार में डूबा रहता है।

वर्तमान समय में हमारे समाज में अनेक प्रकार के विद्यालय संचालित हो रहे हैं इनमें सरकारी विद्यालय, गैर सरकारी विद्यालय, आवासीय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय आदि प्रमुख हैं। इन विद्यालयों में शिक्षकों की योग्यता, विद्यालय परिवेश में सुविधाओं का समावेश, शिक्षकों का चरित्र, विद्यार्थियों का सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृति, अभिभावको का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर आदि के द्वारा वातावरण निर्मित होता है। प्रत्येक माता पिता विद्यालय से यह अपेक्षा करता है कि विद्यालय का भौतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण उच्च कोटि का हो ताकि उसमें अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सके। विद्यालय वह पवित्र हवनशाला है जिसमें शिक्षकों के मस्तिश्क में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव का हवन होता है और उसकी ज्वालाओं से सुनागरिकों का निर्माण होता है। विद्यालय विद्यार्थियों को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें ज्ञान का उचित उपयोग अन्तर्निहित क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करता है। बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। प्रत्येक बालक का पालन–पोशण एवं विकास निश्चित वातावरण में होता है, उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती हैं अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियाँ उसमें विकसित होती हैं। विद्यालय में विभिन्न आदतों, रूचियों, योग्यताओं एवं दृश्टिकोणों के बालक आते हैं जैसे–जैसे बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। वह बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आता है जिससे बालक में कुछ शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होता है इस परिवर्तन में विद्यालय वातावरण का प्रमुख योगदान होता है।

विद्यालय वास्तव में मूलभूत संरचनात्मक सुविधाओं वाली एक प्रशासनिक इकाई है जिस प्रकार माता–पिता का व्यक्तित्व एवं व्यवहार घर के वातावरण को प्रभावित करता है, उसी प्रकार अध्यापक विद्यालय के वातावरण को प्रभावित करते हैं। विद्यालय एवं कक्षा का

* शोधार्थी (शिक्षा) महर्षि दयान्नद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)
**वरिष्ठ व्याख्याता हरिभाऊ उपाध्याय महिला शिक्षक महाविद्यालय (सी.टी.ई.) हुडुण्डी, अजमेर (राजस्थान)

रूचिपूर्ण व मैत्रीपूर्ण वातावरण विद्यार्थियों के स्वस्थ मानसिक एवं शारीरिक विकास में सहायक होता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहां घर से अलग विद्यार्थियों की सूचना एवं ज्ञान के हस्तांतरण, उनकी विभिन्न विशयों से संबंधित सम्प्रत्यों की समझ के विकास के साथ उन्हें भविश्य में समायोजन हेतु वांछित विभिन्न कौशलों में प्रवीण बनाने हेतु औपचारिक तरीकों से अवगत कराता है। विद्यालय के सकारात्मक वातावरण से ही एक विद्यार्थी भावी जीवन में प्रगतिशील हो सकता है इसलिए विद्यालय वातावरण को विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं साजाजिक जीवन की नींव कहा जा सकता है।

शोध समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विभिन्न आयाम (सृजनात्मक उद्दीपक, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृत, अनुज्ञात्मक, अस्वीकृति, नियंत्रण) अनुसार विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम सृजनात्मक उद्दीपक में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृत में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अनुज्ञात्मक में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अस्वीकृति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम नियन्त्रण में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

1. **माध्यमिक विद्यालयः**— ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण कराया जाता है माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते हैं।
2. **विद्यालयः**— विद्यालय वे संस्थाएं हैं जहां पर अधिगम पर्यावरण का निर्माण करके शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी के व्यक्तित्व को परिमार्जित करके उसके आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों का विकास करके समाज के लिए सभ्य नागरिक तैयार किए जाते हैं।
3. **विद्यालय वातावरणः**— विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत भौतिक व मानवीय तत्वों को साध्य की प्राप्ति के लिए उपलब्ध व सुव्यवस्थित किया जाता है इसके अन्तर्गत वे सभी व्यवस्थाएं आती हैं जो छात्र के मानसिक विकास में अहम हैं, जैसे विद्यालय भवन, विद्यालय की दिनचर्या, अनुशासन, परीक्षा, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, विद्यालय का मैदान, विद्यालय के शिक्षक आदि।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राजस्थान के सीकर जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है इनमें 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालयो से तथा 200 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालयों से लिये गये हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची का प्रयोग किया गया है। इस परिसूची में 6 आयामों (सृजनात्मक उद्दीपक, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृत, अनुज्ञात्मक, अस्वीकृति, नियंत्रण) के अन्तर्गत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत कार्य में शोधकर्ता ने मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का विश्लेशण एवं व्याख्या

परिकल्पना – 1

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम सृजनात्मक उद्दीपक के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका

तालिका क्रमांक –1

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	56.45	1.25	5.57	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	57.10	1.08		स्तर पर सार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 5.57 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम सृजनात्मक उद्दीपक के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना – 2

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका –

तालिका क्रमांक –2

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	23.50	1.63	6.60	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	31.55	1.54		स्तर पर सार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 6.60 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना – 3

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृत के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका –

तालिका क्रमांक –3

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	29.40	1.58	1.40	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	29.42	1.25		स्तर पर असार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 1.40 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के

विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृत के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना – 4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अनुज्ञात्मक के माध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका –

तालिका क्रमांक –4

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मनक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	26.72	1.181	9.11	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	25.65	1.178		स्तर पर सार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 4 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 9.11 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अनुज्ञात्मक के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना – 5

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अस्वीकृति के माध्यमानों में अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका –

तालिका क्रमांक –5

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	22.95	1.38	27.35	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	19.07	1.45		स्तर पर सार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 5 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 27.35 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम अस्वीकृत के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना – 6

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम नियन्त्रण के माध्यमानों मे अन्तर की सार्थकता को दर्शाती तालिका –

तालिका क्रमांक –6

विद्यालय का प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी	200	28.27	1.31	5.37	0.05 विश्वास
गैर सरकारी	200	28.95	1.21		स्तर पर सार्थक

(df=N1 + N2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398)

सारणी क्रमांक 6 से स्पष्ट होता है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value) 5.37 सार्थकता स्तर 0.05 पर प्राप्त मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के आयाम नियंत्रण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सृजनात्मक उद्दीपक विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का सजृनात्मक उद्दीपक विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक प्रोत्साहन विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक प्रोत्साहन विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्वीकृत विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी

विद्यालयों के विद्यार्थियों का स्वीकृत विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।

4. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अनुज्ञात्मक विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् गैर सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का अनुज्ञात्मक विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अस्वीकरण विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् गैर सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का अस्वीकरण विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।
6. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नियंत्रण विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का नियंत्रण विद्यालय वातावरण उच्च पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ साहित्य

अग्रवाल, श्वेता (2015) : ''उच्च माध्यमिक बालक एवं बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन'', शिक्षा चिंतन त्रैमासिक पत्रिका, नोएडा अंक जुलाई–सितम्बर 2015 पेज 14–22

चतुर्वेदी, एन (2009) : ''विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन'', इंडियन जर्नल ऑफ सोशियल साइंस रिसर्च, वोल्यूम 6(2) पेज 29–37

गैरेट, हेनरी ई. (2011) : ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'', कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

गोयल, सुनिता (2013) : ''मनसा जिले के कक्षा 10 के किशोरवय विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन'', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, वोल्यूम 3 (4) सितम्बर 2013

खींची, पूजा (2017) : ''उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन, एम.एड. शोध प्रबंध (2015–2017), बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर।

कपिल, एच.के (2004) : ''अनुसंधान विधियाँ'', एच.पी. भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

पाण्डेय, उर्मिला और तिवाडी, संजीत कुमार (2017) : ''रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाईड रिसर्च, वोल्यूम (3), मार्च 2017

सिंह, अरूण कुमार (2010) : ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'', मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, नई दिल्ली।

राय, पारसनाथ (2012): ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।